हलीम चला चाँद पर

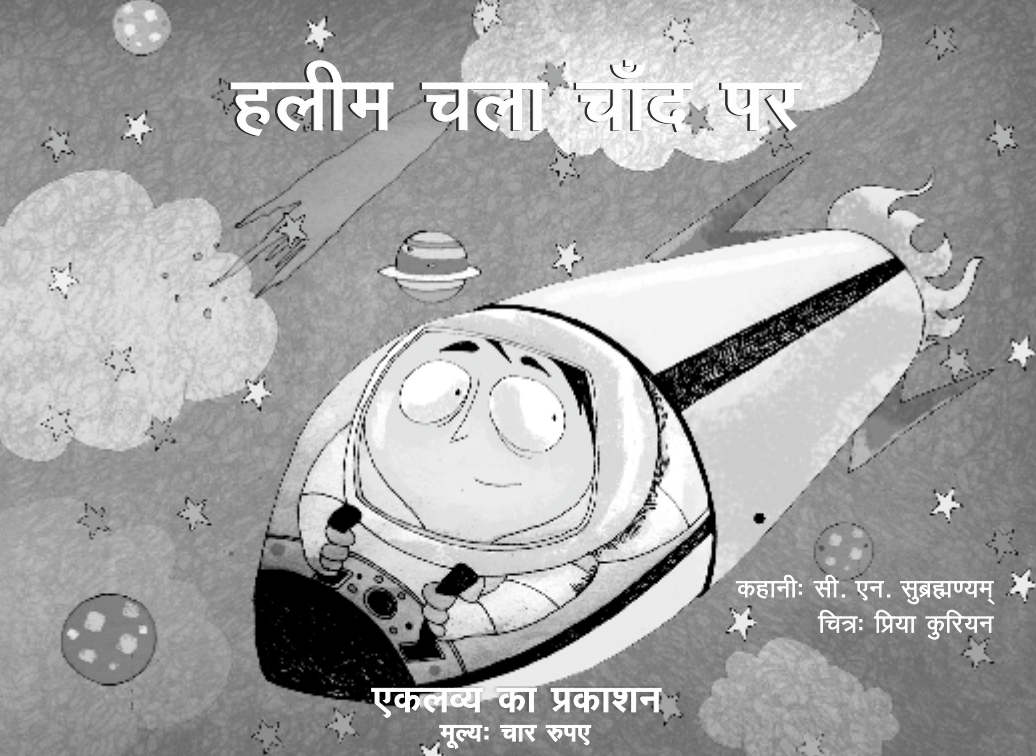

कहानीः सी. एन. सुब्रह्मण्यम्
चित्रः प्रिया कुरियन

एकलव्य का प्रकाशन
मूल्यः चार रुपए

हलीम ने एक दिन सोचा, आज मैं चाँद पर जाऊँगा।

रॉकेट कारखाना

वह रॉकेट के कारखाने
में गया और एक रॉकेट
पर बैठकर चल दिया।

चलते-चलते अँधेरा हो गया। हलीम को डर लगने लगा। उसको तो चाँद तक का रास्ता पता नहीं था।

थोड़ी देर में उसे चाँद दिखा
और वह खुश हो गया।

चाँद पर हलीम को खूब
सारे गड्ढे दिखे और
बड़े-बड़े पहाड़ भी।

लेकिन वहाँ कोई पेड़ या जानवर नहीं थे।
लोग भी नहीं थे।

हलीम ने सोचा, यह भी कोई जगह है!
चलो वापिस घर चलें। वह रॉकेट
में बैठकर घर लौट आया।

एकलव्य, ई-10 शंकर नगर,
भोपाल (म.प्र.) फोनः 0755-2550976
द्वारा प्रकाशित व श्रेया प्रिन्टिंग,
भोपाल से मुद्रित। 2010/5000 प्रतियाँ